उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति तथा उपयुक्त शिक्षण पद्धति

डॉ. कुलदीप सिंह

शिक्षा अज्ञानान्धकारं दूरीकृत्य ज्ञानदीपं प्रज्वालयति।[1]

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है सर्वांगीण विकास। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक तथा सामंजस्य पूर्ण विकास संभव है। व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के द्वारा शिक्षा ही व्यक्ति को वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ बनाती है। साथ ही उसके आचार-विचार-व्यवहार तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान करती है।

The highest education is that which makes our life in harmony with all existence. - rabindranath Tagore.

शिक्षित एवं उत्तर दायित्व के निर्वहन में अग्रणी नागरिक ही एक विकसित एवं सभ्य राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इसमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। राष्ट्र का विकास प्रमुखतया समाज में शिक्षा की प्रकृति पर निर्भर करता है। राष्ट्र निर्माण में जहां प्राथमिक शिक्षा एक आधार के रूप में कार्य करती है तो वहीं उच्च शिक्षा तीक्ष्णता एवं कुशलता प्रदान करती है। विशेष रूप से प्रशिक्षित, विभिन्न विधाओं में पारंगत, ज्ञानी तथा कुशल नागरिकों के निर्माण द्वारा उच्च शिक्षण संस्थान राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं। उच्च शिक्षा एक सूचना आधारित समाज हेतु ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र की छवि एवं स्वरूप के निर्धारण में भी उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है।

भारत में उच्च शिक्षा का स्वरूप

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत विश्व की तीसरी सबसे विशाल एवं व्यापक उच्च शिक्षा प्रणाली धारण करता है। प्राचीन समय में शिक्षा प्रणाली गुरुकुल आधारित थी। स्वतंत्रता के उपरांत शिक्षा राज्यों का दायित्व बन गई। 1976 के बाद से शिक्षा राज्य एवं केंद्र का संयुक्त उत्तरदायित्व है। उच्च शिक्षा के विस्तार एवं गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु केंद्र सरकार द्वारा कई उच्च शिक्षा नियामक संस्थाओं की स्थापना की गई जो विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध एवं नवाचारों को प्रोत्साहन देती है। भारत में स्वतंत्रता पश्चात उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व बृद्धि हुई है। जहां 1950 में मात्र 20 विद्यालय थे वहीं 2014 में यह संख्या बढ़कर 677 हो गई है। महाविद्यालयों की संख्या में भी 74 प्रतिशत वृद्धि हुई है। 1950 में महाविद्यालयों की संख्या 500 थी जो 2013 में 37,204

हो गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति इस प्रकार है–

1. विश्वविद्यालयों की संख्या-851
2. महाविद्यालय की संख्या- 41012
3. उच्च शिक्षा में नामांकन दर (18 से 23 आयु समूह के)-25.8%
4. पुरुष नामांकन दर-26.3%
5. महिला नामांकन दर-25.4%
6. नामांकित छात्रों की संख्या- 366.42 लाख
7. शिक्षकों की संख्या- 1284957
8. विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त छात्र- 34400
9. विद्यानिधि उपाधि प्राप्त छात्र- 28059
10. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ग्रेड प्राप्त केंद्रीय विश्वविद्यालयों की संख्या- 40 में से 35 विश्वविद्यालयों को NAAC ग्रेड प्राप्त।

स्रोत- ऑल इंडिया सर्वे आफ हायर एजुकेशन (AISHE) कि 2017 -18 रिपोर्ट।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 2017-18 में यूजीसी को उच्च शिक्षा पर व्यय हेतु 12805.46 करोड़ रु का अनुदान दिया गया।

गुणवत्ता की सुनिश्चितता

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सदैव एक चिन्तन का विषय रही है। सरकार के द्वारा केन्द्र व राज्य स्तरीय उच्च शिक्षण संस्थानों को पर्याप्त अनुदान दिया जा रहा है इसके बावजूद गुणवत्ता का प्रश्न यथावत है। यद्यपि यूजीसी द्वारा गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु संस्थानों में गुणवत्ता मूल्यांकन इकाइयों की स्थापना की गई है साथ ही University with potential for excellence जैसी योजनाएं भी चलाई जा रही है। परंतु उच्च शिक्षा तब तक अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि वह वर्तमान समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को प्रासंगिक ना बना ले। सरकार के समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती है कि उच्च शिक्षा के इस तीव्रतर विस्तार में गुणवत्ता से समझौता ना हो। उच्च शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन मुख्यतः आधारभूत सुविधाओं, पाठ्यक्रम तथा शिक्षकों से संबद्ध है। गुणात्मक परिवर्तन के इस लक्ष्य को उपयुक्त विषय सामग्री, व्यक्तिगत विकास, संस्थागत संस्कृति, समूह कार्य तथा उपयुक्त शिक्षण विधियों व पद्धतियों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षक की भूमिका

चारित्रिक विकास तथा श्रेष्ठ चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता

है। अतः राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं की योग्यता को बढ़ाएं तथा राष्ट्रीय और वैश्विक अपेक्षाओं के अनुरूप छात्र के व्यक्तित्व का निर्माण करें ताकि वह राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान दे सकें। शिक्षक की विशेषता बताते हुए महाकवि कालिदास कहते हैं–

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था, संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरी प्रतिष्ठापयितव्य एव।।[2]

श्रेष्ठ शिक्षक वही है जिन्हें विषय की गहरी समझ हो साथ ही जो अपने अर्जित ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ तरीके से छात्र तक संप्रेषित कर सके।

उच्च शिक्षा में शिक्षक का प्रमुख कार्य एक ऐसे अधिगम वातावरण का निर्माण करना है जिसमें कि छात्र तर्कसंगत रूप से विचार करने तथा समालोचनात्मक रूप में उन्हें अभिव्यक्त करने में समर्थ हो सके।

उच्च शिक्षा की शिक्षण पद्धतियां

शिक्षण पद्धति या विधि में शिक्षण आव्यूहों व युक्तियों दोनों का समावेश होता है जिसका अनुसरण कर अध्यापक अधिगम को रोचक, आसान व प्रभावपूर्ण बनाता है। विधि परिणाम की गुणवत्ता निर्धारित करती है। शिक्षण विधि के महत्व को स्पष्ट करते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने यह विचार प्रकट किया सर्वोत्तम पाठ्यचर्या तथा परिपूर्ण पाठ्यक्रम भी तब तक निष्क्रिय रहता है जब तक कि इसे शिक्षण की सही विधियों तथा सही प्रकार के अध्यापकों द्वारा जीवन्त ना किया जाए।

वर्तमान में उच्च स्तर पर शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य हैं–

1. ज्ञान प्रदान करना।
2. प्राप्त ज्ञान को प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।
3. सूचना एवं ज्ञान के परीक्षण की क्षमता विकसित करना।
4. नवीन ज्ञान निर्माण की योग्यता विकसित करना।
5. व्यक्तिगत विकास के अवसर देना।
6. स्वयं के अधिगम को नियोजित एवं व्यवस्थित करने की क्षमता विकसित करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है

1. समस्या समाधान विधि
2. आगमन विधि
3. निगमन विधि
4. व्याख्यान विधि
5. दत्त कार्य विधि
6. प्रोजेक्ट विधि
7. कार्यशाला विधि

गुणात्मक उन्नयन हेतु उपयुक्त शिक्षण पद्धति–

सूचना एवं संचार तकनीकी एवं वैश्वीकरण में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अत्यधिक गति प्रदान की है। अतः उच्च शिक्षा में गुणात्मक एवं वर्तमान समय की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षण हेतु उपयुक्त पद्धतियों का प्रयोग किया जाए। मुक्ता अधिगम पद्धति, समूह कार्य पद्धति, एवं प्रोजेक्ट विधि इसमें सहायक सिद्ध हो सकती है।

उच्च शिक्षा में मुक्त अधिगम विधि के अंतर्गत सरकार द्वारा SWAYAM² (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds) को प्रस्तुत किया गया है। यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विकसित है। इसमें 2000 पाठ्यक्रमों, 80000 घंटों का अधिगम सम्मिलित हैं जो की स्नातक, स्नातकोत्तर, अभीयांत्रिकी तथा अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। स्वयम् SWAYAM में वीडियो, ट्यूटोरियल्स, ई सामग्री, स्व मूल्यांकन व विचार विमर्श का समावेश किया गया है। इसी प्रकार SWAYAM PRABHA जो 32 शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का एक समूह है वह UGC, CEC, IGNOU, NCERT, NIOS आदि के द्वारा तैयार विभिन्न पाठ्यक्रमों पर आधारित लिखित सूचना एवं सामग्री का प्रसारण करता है। इसी प्रकार सक्रिय अधिगम पद्धति जिसमें अधिगम का संपूर्ण उत्तरदायित्व छात्र पर होता है, तथा समस्या समाधान पद्धति जिसमें समस्या के संभावित समाधानों का अन्वेषण करते हुए छात्र अधिगम करता है भी अत्यधिक महत्व रखती है।

उपर्युक्त शिक्षण पद्धतियां छात्र को ज्ञान के परीक्षण की क्षमता प्रदान करती है तथा अधिगम में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है। साथ ही छात्र को नवीन ज्ञान निर्माण में सक्षम बनाकर शिक्षा में गुणात्मक संवर्धन करती है।

सहायक आचार्य (शिक्षा) ज.रा.रा.संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. UGC Annual Report 2017-18
2. MHRD Website
3. School Management and Pedagogics of Education- Dr. J.S.Walia
4. मालविकाग्निमित्रम्
5. Frazier, A. (1997) Road Map for Quality TQM IN in Education, St.Lucie Press, Florida.
6. शिक्षायाः दार्शनिकाधाराः- सोमनाथ

सन्दर्भ–

1. ऋग्वेद, सप्तम मण्डल